पाठ 16

नरबदी

(गोंडी लोक कथा)

आइए सीखें - ■जनजातीय लोक जीवन से परिचय। ■अपनों के लिए त्याग की भावना की प्रेरणा। ■वाक्य संरचना के अनुसार वाक्य को जोड़ना। ■क्रिया विशेषण और विशेषण का प्रयोग।

बात बहुत पुरानी है। मैकल पर्वत तब घने जंगलों से घिरा था। उन्हीं जंगलों में एक गाँव था। गाँव क्या कहें उसे? आठ-दस झोपड़ियाँ रही होंगी। उन्हीं में से एक झोपड़ी थी - दुग्गन की।

दुग्गन अपनी प्यारी बेटी नरबदी के साथ रहता था। नरबदी अभी 12 (बारह) वर्ष की ही थी। उसकी माँ उसे जन्म देकर स्वर्ग सिधार गई थी। दुग्गन ने ही उसे माँ की तरह पाला-पोसा था। नरबदी अपने पिता को छोड़कर एक पल भी नहीं रह सकती थी। दुग्गन कभी कंदमूल या दूसरे जंगली फल-फूल जुटाने जंगल जाता तो नरबदी भी उसके साथ चली जाती।

बरसात आने वाली थी। झोपड़ी की मरम्मत के लिए बाँस चाहिए थे। दुग्गन सुबह-सुबह पहाड़ की दिशा में चल पड़ा। नरबदी हमेशा की तरह उसके साथ थी। मोटे बाँस की तलाश में वे दोनों पहाड़ पर चढ़ते गए - ऊपर और ऊपर......। धूप तीखी हो चली थी। घर से लाया पानी भी समाप्त हो चुका था। मैकल के शिखर पर मोटे बाँसों का एक झुरमुट दिखाई दिया। दुग्गन के चेहरे पर खुशी चमक उठी। वह उल्लास से भरकर बोला - ''नरबदी, वो रहे बाँस''।

शिक्षण संकेत - ■कहानी का सार हाव-भाव और रोचकता के साथ प्रस्तुत कीजिए। ■कहानी में आए संवादों को अभिनय, हावभाव के साथ बोलने का प्रयत्न कीजिए। ■शिक्षक बताएँ कि लोक कथा लोक मान्यता पर आधारित होती है। एक ही घटना या तथ्य से सम्बन्धित कई लोक कथाएँ होती हैं।

नरबदी ने मुस्कराने की कोशिश की। वह बुरी तरह थक चुकी थी। प्यास के कारण। कण्ठ और होंठ सूख गए थे। दुग्गन चौंक पड़ा। उसने मुड़कर अपनी लाड़ली की दशा देखी। वह चिन्तित हो उठा। पूछा- ''प्यास लगी है?'' नरबदी ने सिर हिलाकर कहा - ''हाँ!'' दुग्गन ने उसे झुरमुट के नीचे छाँव में बैठा दिया। कहा - ''तू यहीं बैठी रह, मैं पानी लेकर अभी आता हूँ।'' और दुग्गन खाली तूम्बा लेकर पानी की खोज में निकल पड़ा।

मैकल के शिखर पर घने-ऊँचे पेड़ तो थे, लेकिन झरने की कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। दुग्गन भटकता रहा। उसका भी प्यास के मारे बुरा हाल था। वह सोच रहा था - जब प्यास के कारण मेरी यह दशा है तो नन्हीं जान नरबदी का क्या हाल होगा? उसने सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा। सूरज तमतमाया हुआ था। दुग्गन के हाथ अपने-आप प्रार्थना में उठकर जुड़ गए। वह लगभग रुआँसा होकर गिड़गिड़ाया- ''हे प्रभु! मेरी लाड़ली की रक्षा कर। वह बिना माँ की बच्ची है। उसे कुछ हो गया तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा।''

नरबदी अपना दुःख भूल चुकी थी। उसे प्यास की भी याद नहीं रही। वह सोच रही थी - इतनी देर हो गई, पता नहीं बाबा कहाँ-कहाँ भटक रहे होंगे। मेरे कारण वह कितना कष्ट उठाते हैं। उसकी आँखों के सामने पिता का परेशान चेहरा घूम गया। नरबदी की आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह चलीं। वह मन ही मन बड़े देव को मनाने लगी। ''हे बड़े देव! मेरे बाबा को बचा लेना। उनका प्यास के मारे बुरा हाल है। पानी नहीं मिला तो वे मर जाएँगे। तुम मेरे प्राण ले लो लेकिन मेरे प्यारे बाबा को बचा लो।'' और नरबदी वहाँ नहीं थी।

दुग्गन लस्त-पस्त हाँफता हुआ झुरमुट के पास पहुँचा। नरबदी को वहाँ न पाकर वह चिंतित हो उठा। ''नरबदी.......नरबदी!'' वह जोर-जोर से पुकार उठा। नरबदी का उत्तर नहीं आया। पर्वत से टकराकर दुग्गन की ही आवाज देर तक गूँजती रही - नरबदी! नरबदी! जब प्रतिध्वनि शान्त हुई तो दुग्गन ने ध्यान से सुना। झुरमुट के बीच से कलकल का संगीत सुनाई पड़ रहा था। दुग्गन रोते हुए और जोर से पुकार उठा- ''नरबदी, तुम कहाँ हो? देखो पानी मिल गया है। आओ, अपनी प्यास बुझा लो।''

झुरमुट के पीछे से आवाज आई - ''बाबा! तुम जो कल-कल संगीत सुन रहे हो वह मेरी ही ध्वनि है। मैं तुम्हारी प्यास बुझाने के लिए झरना बन गयी हूँ। बाबा। इस जंगल में अब कभी कोई आदमी प्यास से अपनी जान नहीं देगा।''

दुग्गन की आँखों से भी जल धाराएँ फूट चली थीं। वह सिर्फ रो रहा था और बाँसों के झुरमुट से नरबदी बह रही थी - कल.....कल......कल। वह तब से अमरकण्टक से बह रही है - समुद्र तक। नर्मदा के रूप में जीवन रेखा बनकर।

- श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि मध्य प्रदेश के साहित्यकारों में जाना पहचाना नाम है। सम्बन्धों की एवज में, आखेटकों के विरूद्ध, तितली परी, बाल कविताएँ - ऊँचे रखें इरादे, आदिवासी बच्चों के खेल आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

शिखर	-	तूम्बा	-	लस्त-पस्त	-
प्रतिध्वनि	-	झुरमुट	-		

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(क) नरबदी कौन थी? वह किसके साथ रहती थी?

(ख) पिता के साथ नरबदी कहाँ जाती थी?

(ग) दुग्गन सुबह-सुबह पहाड़ की दिशा में क्यों चल पड़ा?

(घ) नरबदी झरना क्यों बन गई?

(ङ) लोककथा के अनुसार नरबदी के कारण किस नदी का जन्म हुआ?

2. निम्नांकित कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) उसकी आँखों के सामने पिता का परेशान चेहरा झूम गया।

(ख) मैं तुम्हारी प्यास बुझाने के लिए झरना बन गई हूँ।

3. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

(क) ....तब घने जंगलों से घिरा था।

(ख) दुग्गन ने उसे......................की तरह पाला पोसा था।

(ग) दुग्गन के हाथ अपने आप..........................में उठकर जुड़ गए।

(घ) मैं तुम्हारी प्यास बुझाने के लिए......................बन गई हूँ।

(ङ) इस जंगल में अब कभी कोई आदमी..................से अपनी जान नहीं देगा।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के सामने कुछ शब्द लिखे हुए हैं, इनमें प्रत्येक के साथ दो-दो पर्यायवाची शब्द हैं, आप उन्हें छाँटकर लिखिए -

	शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
1.	पानी	नीर, पंछी, काला, जल	....
2.	तालाब	नदी, सरोवर, सरिता, ताल	....
3.	पर्वत	पहाड़, गिरि, भू, धरा	....
4.	गणेश	ब्रह्मा, गणपति, लम्बोदर, महेश	....

2. निम्नलिखित गद्यांश में यथा स्थान विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

वह मन ही मन बड़े देव को मनाने लगी हे बड़े देव मेरे बाबा को बचा लेना उनका प्यास के मारे बुरा हाल है पानी नहीं मिला तो वे मर जाएँगे

3. निम्नलिखित शब्दों का सही क्रम करके सार्थक वाक्य बनाइए -

(क) मुस्कराने की कोशिश नरबदी ने।

(ख) चुकी की थक वह तरह बुरी।

(ग) थी वाली बरसात आने।

(घ) वह हो चिन्तित उठा न नरबदी को वहाँ पाकर।

(ङ) रही थी बह नरबदी।

4. दिए गए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय शब्दों से उदाहरण के अनुसार विशेषण बनाइए?

	संज्ञा	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
1.	धन	धनी	यह	ऐसा
2.	सुख	....	वह	....
3.	ज्ञान	....	कौन	....
4.	दान	....	जो	....
5.	बल	....		
6.	गुण	....		

	क्रिया	विशेषण	अव्यय	विशेषण
1.	पढ़ना	पढ़ाकू	आगे	अगला
2.	लड़ना	....	पीछे	....
3.	झगड़ना	....	बाहर	....
4.	बेचना	....	ऊपर	....

6. नीचे बनी तालिकाओं में दिए गए उदाहरणों के अनुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

	शब्द			नया शब्द	अर्थ
(क)	आत्म	+	समर्पण =	आत्म समर्पण =	अपने को दूसरों के हाथ सौंप देना
			प्रशंसा =	=	--------------------------
			गौरव =	=	-------------------------
(ख)	शीत	+	कालीन =	शीतकालीन =	--------------------------
	ग्रीष्म		=	=	--------------------------
	वर्षा		=	=	--------------------------
(ग)	सर्व	+	उत्तम =	सर्वोत्तम =	--------------------------
	नर		=	=	--------------------------
	पुरुष		=	=	--------------------------
(घ)	प्रेम	+	पूर्वक =	प्रेमपूर्वक =	--------------------------
	सम्मान		=	=	--------------------------
	आग्रह		=	=	--------------------------
(ङ)	लिख	+	आवट =	लिखावट =	--------------------------
	बन		=	=	--------------------------
	थक		=	=	--------------------------

योग्यता विस्तार

1 त्याग और समर्पण की भावना वाली अन्य लोक कथाओं का संकलन कीजिए तथा उन्हें कक्षा में सुनाइए।

2 जनजातीय संस्कृति की अन्य कहानियाँ संग्रहीत कीजिए।

> जो मनुष्य जगत की जितनी भलाई करेगा उसको उतना ही सुख प्राप्त होगा।